<u>जागृति समाचार</u>

रिभाईवल मिनिष्ट्रिज् आष्ट्रेलिया कि ओर से
पि० ओ० बांक्स 2718 **बी० सी० टूउम्बाँ क्यु**०4350 **आष्ट्रेलिया**
दूरभाष 61-7-46130633 ;   ईमेल rma@revivalministries.org.au
वेबसाईट www.revivalministries.org.au

**** मार्च 2006 ** मार्च 2006** मार्च 2006 ** मार्च 2006 ****

प्रेरित यीशु का समाप्त किया हुआ काम

यूहन्ना 17 **में**, यीशु अपने पिता से प्रार्थना करता है और 4 पद में कहता है, ***"जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है ।"*** कौन सा काम यीशु संबोधित करता है ? **यूहन्ना** 19 :30 मे यीशु ने कहा, ***"पूरा हुआ और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए ।"*** हम सब **यूहन्ना** 19 मे सहमत होंगे जहाँ पर यीशु ने छुटकारे के काम के विषय मे संबोधन किया जो काम वह केवल क्रुस की मृत्यु द्वारा ही प्रभावित और समाप्त कर सकता था ।तथापि यीशु ने **यूहन्ना** 17 में गतसमनी बगीचा में जाने से पहले फसह का भोजन के विषय में कहता है । उसने स्पष्ट रुप से उसके छुटकारे के कामों को नही बताया, जो महा याजक का काम था, परन्तु उसने अपनी प्रेरितीय कामों को उल्लेख करता है जिस में बारह प्ररितों को खड़ा करने पर था ।

इब्रानियों 3:1 में वचन कहती है, ***"सो हे पवित्र भाईयो तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगिकार करते है ध्यान करो ।"*** परमेश्वर ने जब यीशु को संसार में भेजा, उसने उसे विशेष दो सेवाकाईयाँ पूरा करने के लिए भेजा : **'प्रेरित'** का और **'महायाजक'** का । महायाजक रहते हुए यीशु का विशेष कार्य था अपने आपको हमारे पापों के लिए क्रुस पर सिद्ध बलिदान करके चढ़ाए ।यीशु का प्रेरितीय सेवाकाई कलीसिया की इतिहास में लापारवाही की परन्तु हमारे दिनों में परमेश्वर प्रेरितों को पुन:स्थापित कर रहा है और उनके द्वारा फिर **<u>यीशु को प्रेरित के रूप में</u>** ध्यान केन्द्रित कीया जा रहा हैं । प्रेरित का विशेष कार्य होता है परमेश्वर का घर बनाना (कलीसिया) और परमेश्वर अपना घर बनाने के लिए मार्ग चुना है प्रेरितों के द्वारा । हम याद रखें यीशु ने बारह भविष्द्धक्ताओं को अथवा बारह पास्टरों (रखवालों) को नही चुना सेवाकाई के नींव होने के लिए और कलीसिया की स्थापना की जिम्मादार होने के लिए, अंत तक कलीसिया को सिद्धता को ले जाने के लिए, परन्तु उसने नई सेवाकाई शुरू की : प्रेरितों की सेवाकाई ।

<u>'मैने तेरे नाम को प्रगट किया है</u>

यीशु स्पष्ट रूपसे कहता है **यूहन्ना** 17: 6–19 में, जो कार्य उसने समाप्त की थी वह था बारहों की प्रेरितीय तालीम । पहला विशेष बात यीशु अपनी पिता को विवरण देता हैं बारहों के तालीम के संदर्भ में पद 6 में ***"मै ने <u>तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया</u> जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया : वे तेरे थे और तू ने मुझे दिया और उन्हों ने तेरे वचन को मान लिया हैं ।"*** इसका मतलब क्या है ? सुसमाचारों में यीशु ने परमेश्वर को **'पिता '** कहकर पुकारा है अथवा बताया कि **परमेश्वर 'पिता' है 170 से भी अधिक बार** । क्या **'पिता'** नाम था जो उसने अपने चेलों को प्रगट किया था? क्या **'पिता'** नाम है ? साधरणत: **'पिता'** एक संज्ञा उसे देते है जो हमारा पिता होता है और यही परमेश्वर के साथ भी है । यीशु ने हम स नहीं कहता है कि परमेश्वर का नाम पिता है परन्तु वह हम से परिचय कराता है परमेश्वर पिता के रूप में । सो उसने अपने चेलों को किस नाम से प्रगट किया ?

जब परमेश्वर ने मूसा को बुलाया निर्गमन 3 में और उसे मिस्र में जाने के लिए नियुक्त किया, मूसा ने कहा ***"यदि वे मुझसे पूछें, कि उसका नाम क्या है ? तब मैं उनको क्या बताऊं ?"*** **पद** 13 । परमेश्वर उत्तर दिया और कहा, ***"मैं जो हूं सो हूं है तू इस्राएलियों से कहना, कि जिसका नाम मैं हूं है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है"*** **पद** 14 । यह प्रगट किया

गया परमेश्वर का नाम अनुवाद किया गया है '**यावे**' अथावा '**यहोवा**' लेकिन अंग्रेजी बाइबल में हिब्रू शब्द का परमेश्वर का नाम उच्चारण करना कठीन होता है इसलिए '**प्रभु**' (**लोर्ड**) लिया गया हैं । पुराने नियम मे परमेश्वर का प्रगट किया गया यही हैं । यीशु ने कहा, ***"मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया"*।**

सो नयाँ नियम में परमेश्वर का प्रगट किया गया नाम क्या हैं? जब स्वर्गदूत मरियम को घोषणा किया कि परमेश्वर उसके द्वारा अपना पुत्र को लाना चाहता है, उसने तुम से कहा है ***"उसका नाम यीशु रखना ।"* लूका** 1 :31 यीशु *यहोशूआ* का संक्षिप्त नाम है जिसका अर्थ है '**यावे ही उद्धार है' अथवा 'प्रभु उद्धारकर्ता** ' ; इसी से हमें नाम मिलती है '**उद्धारकर्ता** ' । सुसमाचारो ं मे ं कई बार यीशु ने अपने नाम को संबोधन किया : **"मेरे नाम में"** । प्रर्थना की सुनवाई उसी की नाम में होगी ; दुष्ट आत्माँए उसी के नाम में निकाली जाएगी ; बीमारी को चंगाई उसी के नाम में मिलेगी । पतरस **प्रेरित** 3 :16 में घोषणा करता है कि लंगड़ा व्यक्ति किया गया **"उसके नाम में विश्वास करने के द्वारा"** । **"यीशु का नाम नामों मे श्रेष्ठ नाम है" फिलिप्पियों** 2 : 9 – 11 । सामर्थ्य और अधिकार **यीशु** के नाम में है ! जब यीशु ने प्रेरितों को ***"पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के <u>नाम से</u> बप्तिस्मा"*** देने के लिए आज्ञा दी **मत्ती** 28 : 19, ध्यान दिजीए उसने 'नाम' कहा न कि 'नामें' । जब हम इस बात को पूर्ण रूपसे समझेंगे तब हम उस बात को जानेंगे कि पतरस ने **प्रेरित** 2 :38 में क्यों आज्ञा दी सुसमाचार पर विश्वास करनेवालो ं को ***"प्रभुयीशु के नाम में"*** बपतिस्मा लेने के लिए और **प्रेरित** 19 : 5 में पौलुस ने भी ***प्रभु यीशु के नाम में*** बप्तिस्मा दिया । पहला कदम हम लोंग चेले बनाने के लिए उस नाम पर विश्वास करने वालों को बपतिस्मा देते हैं । दूसरे शब्द में **<u>हम लोंग बालक चेलों को प्रभु का नाम प्रगट करते हैं</u> ।**

<u>मैने उन्हें वचन दिया है</u>

दुसरी बात यीशु ने पिता से कहा कि उसने प्रेरितों को प्रशिक्षण देकर समाप्त की **यूहन्ना** 17 : 8 ***"क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुँचा दी, मै ने उन्हें उनको पहुँचा दिया और उन्हों ने उनको ग्रहण किया : और सच सच जान लिया हैं, कि मैं तेरी ओर से निकला हूं, और प्रतिति कर ली है कि तू ने ही मुझे भेजा ।"*** चेला बनाने का दुसरा कदम है ***"उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओं "* मत्ती** 28 : 20। यीशु ने प्रेरितों को सिखाया और परमेश्वर ने जो वचन उसे दी थी अवगत कराया । यह बहुत ही भयवाह है ! यीशु ने आसानी से कहता है कि परमेश्वर का नाम उन्हें प्रगट करके और परमेश्वर का वचन उन्हें देकर उसने सफलता के साथ प्रेरितों को शिष्यत्त्व सिखाया ।

<u>इन से मेरी महीमा प्रगट हुई हैं</u>

तीसरी बात यीशु ने बारह के तैयारी के विषय में कहा **पद** 10 में ***"और जो कुछ मेरा है वह तेरा है; और इन से मेरी महीमा प्रगट हुई है ।"*** यीशु ने बारह को इस प्रकार ग्रहण किया जैसे पिता से प्रेरित था । **लूका** 6: 12-13 में बारह को नाम देने से पहले यीशु ने रात प्रर्थना में बीताई, जो बहुत चेलों मे से चुने गए थे । परमेश्वर का नाम उनको प्रगट करने के बाद और परमेश्वर का वचन अवगत कराने के बाद अब वह कहता है कि **"इनमें महीमा प्रगट हुई है"** । प्रेरित पौलुस कहता है एक प्रेरित होने के नाते उसका लक्ष्य है कि संतो को ज्ञात कराए ***"उस भेद की महीमा का मूल्य क्या है ? और वह यह कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता हैं ।"*** यीशु ने बारहों को उस स्थान में ले आया जहाँ वह उनमें महीमा पाई । दूसरे शब्दों में, अब ये लोंग प्रभु की प्रतापी उपस्थिति लेकर चल सकते थे और उनके वचनों को ग्रहण करनेवालों को उसका प्रतिनिधि सम्पूर्ण रूप से कर सकते थे ।

<u>नाम के द्वारा रक्षा की</u>

चौथी बात यीशु ने अपने पिता से बिन्ती की **पद** 11 ***"अपने उस नाम से जो तु ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर, कि वे हमारे नाई एक हो।"*** **पद** 12 में यीशु ने कहा कि उसने पिता के नाम में ***"उनकी रखा की "***। दुसरे शब्दों में यीशु ने उनको उसका नाम का सामर्थ्य दिखाया और उसे दृढ़ विश्वास था कि उसके जाने के बाद भी वे लोंग लगातार 'परमेश्वर का सामर्थ्य की

रक्षा' को जानते रहेंगे । **यहूदा** कहता है ***"जो तुम्हें ठोकर खाने से <u>बचा</u> सकता है और निदीस खड़ा कर सकता है"* पद** 24 ।

<u>मेरा आनन्द अपने में पूरा पाए</u>

पांचवी बात जो यीशु ने जिनको उसने बढ़ाया था प्रेरितों के विषय में कहता है,***"कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाए"* पद** 13 । यीशु 12 **पद** में संबोधन करता है कि बारहों में से एक खोया हुआ था ***"कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो ।"*** एक विशेष बात प्रभु के साक्ष ी से हम सिखते हैं कि हमारा काम ***"पिता की इच्छा पूरी"*** करने के लिए हो न कि अपनी इच्छा । कई बार सेवाकाई में और कलीसियाई जीवन में हम उत्साहबर्धक प्रचारकों द्वारा हम आवेश में आते है, कलीसिया वृद्धि के लालच और-और बातें जो हमें **'संसारिक लक्ष्य'** देती है, हम दबाव में आते है और हम स्थानीय कलीसिया की गिनती को बढ़ाने और लोगों को आकर्षित करने इत्यादि पर लग जाते हैं जब कि पिता चहाता है कि हम उसके इच्छा को जाने और उसे पूरा करे । परमेश्वर का पुत्र ने कहा बारह प्रेरितों को सफलतापूर्वक बढ़ाते हुए पिता का दिया हुआ कार्य उसने पूरी की- याद करें कि यहुदा के स्थान मत्तिय्याह ने पूरा किया (**प्रेरित** 1: 26) । क्योंकि प्रेरित लोंग **'प्रभु का नाम जानते थे'** और **'वे वचन जो यीशु ने पिता की ओर से उन्हें दी थी'** प्राप्त किया था और वे लोंग अब **'प्रभु की महीमा अपने आप में लेकर चल सकते थे'** , और **'परमेश्वर का सामर्थ्य को सँभालना जानते थे'**, वे सब **'आनन्द से भरे हुए थे'** ।

<u>प्रेरित बनाकर भेजा</u>

फलस्वरुपः यीशु से उचित प्रशिक्षण पाकर और तैयार हुए लोंग जिनकों परमेश्वर ने उसे दी थी अब वह उन्हें संसार में प्रेरित बनाकर भेज रहा था : ***"जैसे तू ने उन्हें जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा ।"*** **यूहन्ना** 17 : 18 यह शब्द **'भेजा'** ग्रीक भाषा में **'अपोस्टेलो'** है जो प्रेरित का क्रिया पद है । यीशु ने पिता का दिया हुआ कार्य कि पूरा किया । उसी प्रकार हमें भी केवल पिता का दिया हुआ कार्य को पूरी करनी चाहिए, वह है उसके दिए हुए लोगों को परिपक्वता में लाए ।

<u>स्त्रियों की सेवाकाई</u>

महा छुटकारा : गत 'मॉर्निंग् स्टार जर्नल्' में रीक जोयनर ने 'महा छुटकारा' नामक एक लेख में उन्होंने कहा कि **स्त्रियां पूरी तौर से स्वतंत्र हो जाने से कलीसिया में प्रभू ने जो भी वरदान अथावा सेवाकाई उनमें रखी हैं इस्तेमाल कर पाएंगे**, यही अंतिम पुनःस्थापना है जो कलीसिया को परमेश्वर की दी हुई कार्य को पूरी तौर से समाप्त करने से पहले अनुभव करनी चाहिए । (मै रीक के बातों नही लिखता परन्तु अपनी ही बातों को रखता हूं) मै बहुत ही प्रभावित हुआ जब यह लेख और उसके बाद केवीन जे कन्नर द्वारा लिखी हुई पुस्तक मेरे दृष्टि मे लाई गई । वास्तव में यह पुस्तक हमारे पुस्तकशाला में बेचने के लिए रखी थी । (केवीन कन्नर की सब ज़बरजस्त मांग वाली पुस्तकें हम रखते है) यह पुस्तक का नाम है *'स्त्रियों की सेवाकाई'* और यह 2003 में प्रकाशित की गई थी । परिचय में केवीन वर्णन करते है कई सालों की अध्ययन, प्रयोग और अनुभव के बाद उनका स्थान क्या हैं (केवीन एक वचन के नामी अंतराष्ट्रीय शिक्षक हैं) । केवीन ने सम्पूर्ण तौर से स्त्रियों को सेवाकाई में प्रेरित और एल्डर जैसे कार्य भाल नहीं सौंपा है, अब वे असमानता को मानते हुए कहते है कि **वचनानुसार सेवाकाई में स्त्रियों कोई रोक नही हैं** और इसलिए 'परमेश्वर परमेश्वर ही रहे' जब बात उसके चुनने पर आती है स्त्री हो या पुरुष कलीसिया में कोई विशेष कार्य पूरी करनी हो ।

पुस्तक में, केवीन सम्पूर्ण रुप से 1 **कुरिन्थियों** 14:34-35 और 1 **तीमुथियुस** को समझाते है । **"सत्य के वचन को सठीक ढ़ंग से बाटना"** 1 **तीमुथियुस** विशावासयोग्य साबित होता हैं **'मूल संदर्भ'** में और यही पाँच प्रकार के सेवाकाई हैं :

1) बाईबल के कोई भी वचन **<u>पुस्तक के विषय अंश के आधारित संदर्भ में ही</u>** पढ़ना चाहीए । तीमुथियुस के आयतें बहुत ही रोचक है जहाँ पौलुस **"एक स्त्री के विषय"** मे कहता है और एक बार भी बहुवचन में संबोधन नहीं किया गया । इसलिए यह कहना गलत होगा कि पौलुस बयान करता स्त्रियों सिखाने के लिए अनुमति दी जानी चाहिए या नहीं ।

2) तब वचन का अंश **<u>पुस्तक के आधारित संदर्भ में</u>** पढ़ना चाहिए । 1**तीमुथियुस** 2 **में पौलुस पुरुषों और स्त्रियों दोनों को कलीसिया के सभा में किस प्रकार प्रर्थना करना चाहिए ।**

3) वचन के अंश और अध्याय **<u>पुस्तक के संदर्भ में</u>** पढ़ना चाहिए ; उदाहरण के लिए, 1 **कुरिन्थियों** 14: 34-35 में पौलुस दो बार कहता है स्त्रियों को कलीसिया मे बाते नहीं करनी चाहिए लेकिन **अध्याय** 11: 5 में पौलुस ने पहले ही कह दिया है कि सभा में स्त्रियाँ प्रर्थनी और भविष्यद्वाणी करती हैं ।

4) वचनों के पुस्तक **<u>नियम के आधारित संदर्भ में</u>** जाची जानी चाहिए । इसलिए कलीसिया में स्त्रियों के भूमिका जाँचने से पहले हमें सुसमाचारों को देखना चाहिए कि किस प्रकार यीशु स्त्रियों से वास्ता रखते थे और विशेष एक प्रश्न करें : 'क्या स्त्रियों को यीशु के साथ बाते करने के लिए अनुमति था ?' और हन्नाह भविष्यद्वक्तिन के विषय में क्या कहें ? वह तो खुलेआम मन्दिर मे बोलती थी **लूका** 2: 36-38।

5) तब किसी भी वचन का **<u>मूल संदर्भ</u>** हमारा अनूवाद को प्रमाणित करना होता है **<u>सम्पूर्ण बाईबल के आधारित</u>** । इसलिए हमें एक प्रश्न पूछनी चाहिए क्या दबोरा को इस्राएल का न्यायी बनाकर परमेश्वर ने गलती की ? **न्यायियों** 4 में न्यायी के रुप में दबोरा इस्राएल शासन करती थी । वह एक भविष्यद्वक्तिन भी थी (मतलब एक स्त्री भविष्यद्वक्ता) **पद** 4 । दबोरा **"इस्राएल में माता "** भी थी 5 :7 **पद** । दबोरा एक विवाहीत स्त्री थी : 1 **कुरिन्थियों** 14 : 34-35 विवाहीत स्त्रियों के विषय में पौलुस द्वारा लिखी हुई विवरण बहुत ही रोचक है !

दबोरा तीन प्रकार के भूमिका और सेवाकाई पूरी कर रही थी : न्यायी के तौर पर एक राज़कीय सेवाकाई की निभा रही थी, वह भविष्यद्वक्तिन थी ; वह एक आत्मिक माता थी, जिसका मतलब वह आत्मिक बच्चों को बड़ा रही थी और सारे राष्ट्र को आत्मिक मातृभाव दे रही थी । वचन का शिक्षा साफ हैं कि पुरूषों और स्त्रियों को बराबर सृष्टि की परन्तु अलग-अलग भूमिका निभाने के लिए । स्त्रीयों के ऊपर पुरूषों द्वारा अधिकार करने का कारण था पतन (**उत्पत्ति** 3 : 16) छुटकारा द्वारा, जो पुराने पाप आए हुए दण्ड यीशु ने मनुष्य जाती को निष्फल किया और छुटकारे में परमेश्वर के दृष्टि में अब पुरूष और स्त्री बराबर हैं और परमेश्वर के राज्य में स्त्री और पुरूष में कोई भी प्रभेद और भिन्नता नहीं (**गलातियों** 3 : 28) । इसलिए हमें अपनी ही धर्म और सांस्क्रितिक पक्षपात का सामना करना होगा और वचन के स्पष्ट उपदेश को गले लगाना होगा, और स्त्रियों के ऊपर होते पक्षपात के विरुद्ध खड़ा होना होगा । फलस्वरूव परमेश्वर के राज्य के आधा जनसंख्या में सत्य स्वतंत्रता दिखाई पड़ेगी, जैसे कई स्थानों में कलीसिया में स्त्रियों की संख्या पुरूषों से अधिक हैं ।

केवीन जे कन्नर के 'स्त्रियों की सेवाकाई ' के प्रति के लिए शिलोह पुस्तकालय को लिखें । मूल्य 25 डालर पुस्तक भेजने तक ।

<u>शिलोह अंतराष्ट्रीय सेवाकाई के प्रेरितीय पाठशाला</u>

एप्रिल 12 से जून 17 तक

यह पाठशाला सबके लिए खुली है

पाठशाला के दाखिला लेने के लिए आपको स्वागत है और सेवाकाई में शिक्षा पाने के लिए अथवा पाठशाला में एक दिन केलिए अथवा किसी भी समय कुछ दिनों के लिए भ्रमण करे

हम 25 अंतराष्ट्रीय सेवकों के आशा करते हैं

अभी हम प्रभु में ठहरे हुए है कि प्रभु सारे आवेदकों को व्हीझा प्रदान करे और यह आसान काम नहीं प्रभु की स्तुती हो एक नाईजेरिया के भाई को व्हीझा प्रदान हुआ परन्तु बाँकी 8 और भी है जो अपने-अपने एम्बैसि से उत्तर के प्रतिक्षा में हैं ।

<u>ईस्टर् प्रेरीतीय / भविष्यद्वक्तीय सम्मेलन -अप्रैल 13 से 15 तक</u>

पास्टर पेट मोरगेन, प्रसिद्ध गायक और वचने के सेवक

सामुएल जॅन्युअरि, दक्षिण अफ्रिका से भविष्यद्वक्ता सेवक

सामुएल ब्रिस्बेन के कलीसियाओं में सेवाकाई की है और अन्तराष्ट्रीय सेवाकाई है

और पॉवल गालीगेन

जून् 10 से 12 तक प्रेरितीय / भविष्यद्वक्तीय सम्मेलन

शिलोह में पाठशाला के अन्तराष्ट्रीय प्रतिनिधियों को अवकाश देने के लिए

मुख्य सेवकगण जो पाठशाला होंगे सेवाकाई पहुँचाएगें ।

शिलोह अर्ध-वार्षिक प्रेरितीय तालीम पाठशाला- जून् 19 से जुलाई 1 तक

यह दो-सप्ताहिक पाठशाला में अन्तराष्ट्रीय प्रतिनिधिगण सामेल होंगे ।

यह पाठशाला 'प्रतिमान' प्रशिक्षण पाठशाला के रूप में

अन्तराष्ट्रीय अगुओं को किस प्रकार छोटी-अवधि की प्रशिक्षण देनी चाहिए ।

Ph. 46130633   email: rma@revivalministries.org.au